शैली विज्ञान का सैद्धान्तिक स्वरुप

डॉ0 सरिता मिश्रा

प्राचीन काल एवं मध्य काल में दार्शनिक विचारधाराओं का समाज में वर्चस्व होने के कारण साहित्य–समीक्षा दार्शनिक सिद्धान्तों पर अबलम्बित थी। कालान्तर में मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र ने साहित्य–आलोचना के क्षेत्र में पदार्पण किया और समीक्षकों ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर साहित्य का मूल्यांकन प्रारम्भ किया। धीरे–धीरे भाषाविज्ञान के विकास ने साहित्य–समीक्षा को प्रभावित करना प्रारम्भ किया। भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से साहित्य–समीक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। परिणामस्वरुप भाषा और साहित्य के क्षेत्रों में अन्तर–शास्त्रीय अध्ययन–प्रणाली के रुप में शैली विज्ञान का उदय हुआ। इस प्रकार शैली विज्ञान भाषाशास्त्र और साहित्य शास्त्र की संधि पर साहित्य के जांचने परखने की भाषावादी दृष्टि है। संक्षेप में, शैली विज्ञान साहित्य के अध्ययन–विश्लेषण की वैज्ञानिक पद्धति के रुप मे विकसित हुआ।

शैली विज्ञान की परम्परा भारतीय (संस्कृत) समीक्षकों और पाश्चात्य समीक्षकों मे समानरुप से परिलक्षित होती है। यद्यपि भाषावादी दृष्टिकोण से इसे नवीन विज्ञान माना जाता है, किन्तु यह नवीन नहीं है, बल्कि इसका संदर्भ–परिवर्तित हुआ है। यूरोप में प्लेटों और प्लेटिनस तथा भारत में शैव एवं वैष्णव दार्शनिकों ने दार्शनिक आधार पर साहित्य का मूल्यांकन किया। उनके लिये कविता आत्मतत्व की अभिव्यक्ति थी।